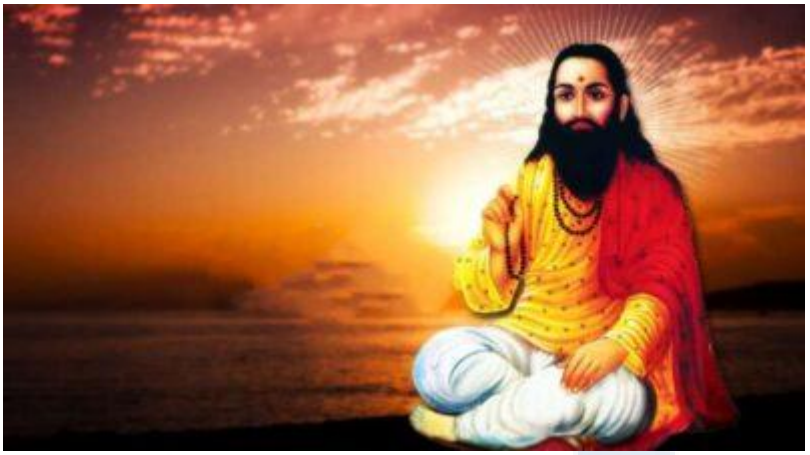

रविदास चालीसा

॥ दोहा ॥

बन्दौं वीणा पाणि को,

देहु आय मोहिं ज्ञान।

पाय बुद्धि रविदास को,

करौं चरित्र बखान॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मातु की महिमा अमित है,
लिखि न सकत है दास।
ताते आयों शरण में,
पुरवहु जन की आस॥

॥ चौपाई॥
जै होवै रविदास तुम्हारी,
कृपा करहु हरिजन हितकारी।

राहू भक्त तुम्हारे ताता,
कर्मा नाम तुम्हारी माता।

काशी ढिंग माडुर स्थाना,
वर्ण अछुत करत गुजराना।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

द्वादश वर्ष उम्र जब आई,
तुम्हरे मन हरि भक्ति समाई।

रामानन्द के शिष्य कहाये,
पाय ज्ञान निज नाम बढ़ाये।

शास्त्र तर्क काशी में कीन्हों,
ज्ञानिन को उपदेश है दीन्हों।

गंग मातु के भक्त अपारा,
कौड़ी दीन्ह उनहिं उपहारा।

पंडित जन ताको लै जाई,
गंग मातु को दीन्ह चढ़ाई।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

हाथ पसारि लीन्ह चौगानी,
भक्त की महिमा अमित बखानी।

चकित भये पंडित काशी के,
देखि चरित भव भय नाशी के।

रत्न जटित कंगन तब दीन्हाँ,
रविदास अधिकारी कीन्हाँ।

पंडित दीजो भक्त को मेरे,
आदि जन्म के जो हैं चेरे।

पहुँचे पंडित ढिग रविदासा,
दै कंगन पुरइ अभिलाषा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

तब रविदास कही यह बाता,
दूसर कंगन लावहु ताता।

पंडित जन तब कसम उठाई,
दूसर दीन्ह न गंगा माई।

तब रविदास ने वचन उचारे,
पंडित जन सब भये सुखारे।

जो सर्वदा रहै मन चंगा,
तौ घर बसति मातु है गंगा।

हाथ कठौती में तब डारा,
दूसर कंगल एक निकारा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

चित संकोचित पंडित कीन्हें,
अपने अपने मारग लीन्हें।

तब से प्रचलित एक प्रसंगा,
मन चंगा तो कठौती में गंगा।

एक बार फिरि परयो झमेला,
मिलि पंडितजन कीन्हों खेला।

सालिग राम गंग उतरावै,
सोई प्रबल भक्त कहलावै।

सब जन गये गंग के तीरा,
मूरति तैरावन बिच नीरा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

डूब गई सबकी मझधारा,
सबके मन भयो दुःख अपारा।

पत्थर मूर्ति रही उतराई,
सुर नर मिलि जयकार मचाई।

रहयो नाम रविदास तुम्हारा,
मच्यों मगर महँ हाहाकारा।

चीरि देह तुम दुग्ध बहायो,
जन्म जनेऊ आप दिखाओ।

देखि चकित भये सब नर नारी,
विद्वानन सुधि बिसरी सारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ज्ञान तर्क कबिरा संग कीन्हों,
चकित उनहुँ का तुम करि दीन्हों।

गुरु गोरखहिं दीन्ह उपदेशा,
उन मान्यो तकि संत विशेषा।

सदना पीर तर्क बहु कीन्हाँ,
तुम ताको उपदेश है दीन्हाँ।

मन महँ हारयो सदन कसाई,
जो दिल्ली में खबरि सुनाई।

मुस्लिम धर्म की सुनि कुबड़ाई,
लोधि सिकन्दर गयो गुस्साई।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अपने गृह तब तुमहिं बुलावा,
मुस्लिम होन हेतु समुझावा।

मानी नहिं तुम उसकी बानी,
बंदीगृह काटी है रानी।

कृष्ण दरश पाये रविदासा,
सफल भई तुम्हरी सब आशा।

ताले टूटि खुल्यो है कारा,
माम सिकन्दर के तुम मारा।

काशी पुर तुम कहँ पहुँचाई,
दै प्रभुता अरुमान बड़ाई।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मीरा योगावति गुरु कीन्हों,
जिनको क्षत्रिय वंश प्रवीनो।

तिनको दै उपदेश अपारा,
कीन्हों भव से तुम निस्तारा।

॥ दोहा ॥
ऐसे ही रविदास ने,
कीन्हें चरित अपार।
कोई कवि गावै कितै,
तहूं न पावै पार॥

नियम सहित हरिजन अगर,
ध्यान धरै चालीसा।
ताकी रक्षा करेंगे,
जगतपति जगदीशा॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा